इकाई 5 वास्तुशास्त्र के आधारभूत सिद्धान्त (भाग 2)

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 वास्तु के सामान्य आधारभूत सिद्धान्त

5.2.1 वास्तु का जीवन पर प्रभाव

5.2.2 गृह –दिशा एवं पञ्चभूत का सिद्धान्त

5.2.3 वास्तुशास्त्र और भवन निर्माण का सिद्धान्त

5.3 वास्तुदोष और शयन कक्ष

5.3.1 घर के पास लगाये जाने वाले उचित वृक्ष

5.3.2 वृक्षों के सामने दो मंजिल गृह विचार

5.3.3 सफल व्यवसाय के लिए शहर चुनाव विचार

5.4 सारांश

5.5 शब्दावली

5.6 उपयोगी पुस्तकें

5.7 बोध प्रश्न

5.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन कर लेने के बाद आप:

- वास्तुशास्त्र के मूल आधारभूत सिद्धान्तों बतायेंगे।
- अच्छे वास्तु का जीवन पर क्या प्रभाव होता है इसको बतायेंगे।
- अशुभ वास्तु के प्रभाव से भी परिचित होंगे।
- गृह के दिशा का विचार करते हुए पञ्च तत्वों पर आधारित सिद्धान्त की ब्याख्या पूर्णतया करेंगे।
- भवन निर्माण में वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तों को पूर्णतया बतायेंगे।
- वास्तुदोष और शयन कक्ष का विचार करके बतायेंगे।
- घर के आस –पास कौन से वृक्ष लगाने चाहिए तथा इसका फल क्या होगा इस बारे में भी आप बतायेंगे।
- दो मंजिल गृह के सामने बड़े वृक्ष हो तो क्या समाधान करना चाहिए इसके बारे में भी बतायेंगे।

- व्यापार की सफलता के लिए शहर का चुनाव भी वास्तु सिद्धान्तों के अनुसार करेंगे।

5.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई संस्कृत विभाग, मानविकी विद्यापीठ, इन्दिरागांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में संचालित वास्तुशास्त्र में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम के अन्तर्गत, वास्तुशास्त्र के स्वरूप एवं इतिहास नामक पाठ्यक्रम की खण्ड 1 " वास्तुशास्त्र का स्वरूप " नामक उपशीर्षक के अन्तर्गत यह पाचवीं इकाई है। इस इकाई का नाम है " वास्तु के आधारभूत सिद्धान्त (भाग 2)"चूँकि अधिकाधिक लोगों के मन में तमाम तरह की बातें आती रहती है कि वास्तु के आधारभूत सिद्धान्त क्या है तथा इसके अनुरूप गृह निर्माण कैसे किया जाए कि लाभ मिल सके, प्रस्तुत पाठ इस बात के समाधान के लिए विल्कुल उपयुक्त होगा क्योंकि इसमें इन वास्तु सिद्धान्तों की चर्चा की गयी है जिससे ना ही तो दोषों के कारण भवन परिवर्तन करना पड़ेगा और ना ही तोड़ –फोड़ ही, ना ही मन में कोई शंका होगी। वास्तु का स्पष्ट आशय यही होता है कि चारों दिशाओं से मिलने वाली उर्जा का सन्तुलन अपने भवन में प्राप्त होना।और यह तभी प्राप्त होगा कि जब आपका भवन वास्तु के आधारबहुत सिद्धान्तों के अनुरूप हो। यह आधारभूत सिद्धान्त निम्लिखित रूप में होना चाहिए – भोजनशाला दक्षिण-पूर्व में होना चाहिए, मास्टर कमरा दक्षिण –पश्चिम में, बच्चों का कक्ष उत्तर पश्चिम में एवं शौचालय इत्यादि दक्षिण दिशा में होना चाहिए। अन्य बात, जल बहाव सम्बन्धितदिशा का ध्यान इस प्रकार रखना चाहिए कि जल का बहाव उत्तर दिशा में हो, ईशान (उत्तर –पूर्व) को खुला रखना चाहिए, दक्षिण –पश्चिम में अधिक निर्माण करवाना चाहिए या भारी समान हो, मुख्य दरवाजा घर के अन्य दरवाजों से बड़ा और वजनी होना चाहिए। खिडकियां व दरवाजे सम संख्या में हो और पूर्व या उतर में खुला होना चाहिए। तीन दरवाजे एक सिधे में नही होना चाहिए, दवाजे बन्द करते या खोलते समय आवाज नहीं आना चाहिए। पूजा के लिए ईशान कोण हो या भगवान का मुख ईशान कोण में होना चाहिए। उत्तर या पूर्व में तुलसी का पौधा लगायें, पूर्वजो के फोटो पूजा घर मे ना रखें दक्षिण के दीवार पार लगा सकते हैं। शाम को घर में दीपक लगावें एवं आरती करना चाहिए, अपने इष्ट देव का ध्यान और पूजन आवश्य करना चाहिए। भोजन के बाद जूठी थाली लेकर अधिक देर तक नहीं बैठना चाहिए। अपनी आय का एक हिस्सा इष्ट देव के नाम पर अलग रखना चाहिए इससे घर में हमेशा संवृद्धि बनी रहती है। घर का मुख्य द्वार का दिशा विचार भी अति महत्वपूर्ण चिन्तन का विषय है कुछ विद्वानों का अभिमत है कि दक्षिण द्वार शुभ प्रद नहीं होता है, तो कुछ का आशय है कि पश्चिम द्वार भी शुभ नहीं होता है परन्तु इसका निर्धारण करने के लिए जन्मकुण्डली का ज्ञान आवश्यक है, क्योंकि किंचित राशियों के लोगों के लिए ये द्वार बहुत ही शुभ बताया गया है। विशेषतया जिसकी कुण्डली में शनि – मंगल शुभ स्थिति में हों तो ये द्वार भी लाभदायक सिद्ध होगा। इस प्रकार वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों के बारे में इसके दोष को दूर करने के लिए अनेको प्रकार से नियमों को ध्यान में रखकर गृह बनवाने से वास्तु दोष दूर होता है तथा घर में सुख शान्ति प्राप्त होती है।प्राचीन समय से हमारे ग्रंथो के अनुसार पांच प्रकार के अलग अलग शाखाए मानी जाती है जो की निम्नलिखित है –

सर्व प्रथम हमको उन राज गृहों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है जिनका राजाओं के द्वारा निर्माण कराया गया है। दूसरा प्रकार सामान्य व्यक्तियों के रहने के लिए गृह समझना चाहिये तृतीय प्रकार देवतओं के निवास हेतु मंदिर इत्यादि को समझना चाहिए। चतुर्थ प्रकार विश्राम

स्थल, पुस्तकलय,वाचनालय, सामूहिक मनोरंजन हाल इत्यादि समझना चाहिए। पंचम प्रकार सामान्य लोगों के लिए सुविधाए जैसे तालाब, पोखरे, कुए, सामूहिक स्नान गृह इत्यादि समझना चाहिए। इन सभी विषयों का कही न कही वास्तु के आधारभूत सिद्धान्तो से सम्बन्ध है तथा इस पाठ में इन सभी विषयो का पूर्णतया विवेचन किया गया है जिससे की आप लोग इन सभी बातों को समझ कर समाज को लाभ पहुचायें तथा मुझे आशा है की यह पाठ आप सभी को पसन्द आयेगा।

5.2 वास्तु के सामान्य आधारभूत सिद्धान्त

चूँकि पूर्व के पाठ में कुछ सिद्धान्तों का वर्णन किया गया है अब यहाँ पर मुख्य रूप से पांच प्रकार के सिद्धान्तों की चर्चा करने जा रहें है।

1. दिशाओं के ज्ञान के लिए शंकु आदि की स्थापना का सिद्धान्त
2. वास्तु देवता पर आधारित वास्तु पुरुष मंडल चक्र के आधारभूत सिद्धान्त।
3. माप पैमाना अंगुल आदि का प्रमाण, हस्त प्रमाण, आय विचार आदि के सिद्धान्त।
4. वैदिक वास्तु शिल्प के 6 सिद्धान्त।
5. पताका आदि भवन के परिदृश्य का सिद्धान्त।

वास्तु पूजा, बलिदान, हल चलाना, शिलान्यास इत्यादि। इन सिद्धान्तों का अन्य भेद इस प्रकार जानना चाहिए कि वास्तु पूजा अवश्य करना चाहिए दिशायें तथा उनके स्वामी देवता को ध्यान में रखकर भवन निर्माण करना चाहिए। वास्तुशास्त्र के अनुसार अलग अलग कमरों का विचार करना चाहिए। गृह में नौ ग्रहों की अवस्था के अनुसार गृह निर्माण करना चाहिए। वास्तुशास्त्र के आधारभूत सिद्धान्तों के अनुसार कक्ष का निर्माण करना चाहिए। जब वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों के अनुसार भवन निर्माण प्रारम्भ किया जाता है तब ठीक उसी समय नौ ग्रहों की उपस्थिती उसमें समाहित रहती है इस प्रकार कुण्डली के अनुसार ये सभी ग्रह अपना प्रभाव स्थापित करते है। जैसे सूर्य ग्रह का स्थान वास्तु के अनुसार पूजन कक्ष में होता है। जैसे कि पूर्व दिशा को सूर्य ग्रह की दिशा मानी जाती है यानी सूर्य देव पूर्व दिशा के स्वामी हैं, इसके अलावा चन्द्रमा वायव्य कोण, यानि उत्तर –पश्चिम दिशा के स्वामी है। मंगल ग्रह दक्षिण दिशा के स्वामी है, बुध ग्रह उत्तर दिशा के स्वामी है। चूँकि सूर्य का प्रभाव वास्तुशास्त्र में सर्वाधिक है अत: इनके सिद्धान्तों के अनुसार चलना सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है। सूर्योदय से पहले ब्रह्म मुहूर्त में सूर्य उत्तर पूर्व भाग में होते हैं, यह समय चिन्तन मनन एवं अध्ययन के लिए अति उत्तम होता है। सुबह सूर्योदय के बाद सूर्य ठीक पूर्व दिशा की ओर होते हैं अत: भवन बनाते समय इस बात का ध्यान देना चाहिए कि इसप्रकार गृह का निर्माण करें कि सूर्य का प्रकाश घर में पर्याप्त मात्रा में प्राप्त हो। भवन निर्माण में सर्व प्रथम इन सिद्धान्तों को ध्यान में रखकर कार्य आरम्भ करना चाहिए – भवन वास्तु –

	गृह के मुख्य अंग	सर्वोत्तम दिशा	अच्छा दिशा	वैकल्पिक दिशा स्थिति के अनुसार
1.	भोजनालय	अग्निकोण	दक्षिण	पूरब
2.	शौचालय	वायव्य	पश्चिम	दक्षिण

3.	सीढ़ियाँ	नैऋत्य	दक्षिण	पश्चिम
4.	बोरिंग	ईशान	पूर्व	उत्तर
5.	बड़ी टंकी	पश्चिम	ईशान	दक्षिण
6.	मंदिर	ईशान	पूर्व	उत्तर
7.	शयन कक्ष	नैऋत्य	पश्चिम	दक्षिण
8.	बच्चों का कक्ष	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम
9.	अतिथि कक्ष	वायव्य	उत्तर	पश्चिम
10.	हाल	वायव्य	उत्तर	पश्चिम

शयन कक्ष में तिजोरी आलमारी अगर यदि रखना हो तो उसे दक्षिण की दीवार से सटाकर ही रखें, अर्थात तिजोरी आलमारी का मुख उत्तर दिशा की ओर खुलना चाहिए। भोजनालय और शौचय कभी भी एक सीधे में नहीं होना चाहिए, यदि है तो भोजनालय के दरवाजे पर एक लाल रंग का क्रिस्टल लगाना चाहिए। गृह निर्माण से पूर्व सम्बन्धित भूमि या (प्लाट) पर एक अहोरात्र अर्थात 24 घंटा गायों को ठहराना चाहिए जिससे की भूमि की शुद्धि हो जाय। ईशान दिशा में भूमि या छत सबके लिए अत्यन्त वृद्धि कारक माना गया है, जब कि नारद पुराण के अनुसार नैऋत्य दिशा की भूमि या छत ऊँची होनी चाहिए।वास्तु शास्त्र में सर्व प्रथम दीवार बनने से ही ध्यान देना आरम्भ कर देना चाहिए, दीवारें सीधी और एक समान होना चाहिए, कहीं पर मोटी तो कहीं पर पतली नहीं होना चाहिए इसका अशुभ परिणाम हो सकता है। चूँकि घर में हमें सुख –शान्ति, मान –सम्मान और धन सहित सभी सुविधायें प्राप्त होती हैं। परन्तु इन सभी बातों के लिए अच्छे मुहूर्त में कार्य आरम्भ करना चाहिए। पृथ्वी, जल, वायु, आकाश और अग्नि इन पांच तत्वों से वास्तु की उत्पत्ति हुई है। हर तत्व की प्रगति को गहन चिन्तन कर के अनेकों वास्तु सिद्धान्तों को प्रतिपादित किया गया है समाज में हर तरह के व्यक्ति के लिए माकन की लम्बाई –चौड़ाई – ऊंचाई नजदीकी वनस्पति, पर्यावरण, देवस्थान, मिट्टी का रंग, गन्ध विभिन्न प्रकार के विन्दुओं को ध्यान में रखते हुए अनुकरणीय सिद्धान्तों की रचना किया गया है ताकि समाज में निम्न –मध्यम और उच्च सभी समाज के लिए लाभप्रद हो सकें। कभी भी वास्तु के सभी बातों का विचार करके जैसे –शिलान्यास आदि के लिए मुहूर्त, काल, स्थिति, लग्न, कोण आदि भवन में निर्मित किए गये कमरों की माप, आंगन, रसोई घर, शयनकक्ष, कामन रूम, बालकनी आदि की स्थिति पर वास्तु के अनुरूप विचार करके ही निर्माण कार्य करना चाहिए यही वास्तु के आधारभूत सिद्धान्त माने गये हैं।

शुभ लक्षण – भवन बनने वाली स्थान की ओर अगर यदि भवन स्वामी का जाना निरन्तर हो तथा उस समय सामने से गाय अथवा सुमंगली कन्याएं आती हो, तथा फल –संगीत – दही – फूल –सिंदूर आदि पूजन का थाली दिखाई दे, अथवा शीशा, दर्पण, चन्द्रमा का उगना, भोजन, दूध से भरा हुआ पात्र या वर्तन, जल या पानी, मृत व्यक्ति की शव यात्रा को देखना, कौवों को दाहिने तरफ से उड़ना, लोमड़ी का बाई तरफ से भागना, नंगा बालक, कपड़ों को धोने वाला धोवी, लाल साड़ी पहने हुए कोई स्त्री और हाथी, अगर ये सब चीजें दिखाई देती है

तो बहुत ही शुभ दायक होता है । अन्य बातों को इस प्रकार समझना चाहिए कि पूजा हमेशा पूर्व या उत्तर में मुह करके करना चाहिए । पूजा जमीन पर आशन रखकर ही करना चाहिए सुबह –शाम दीपक जलाएं । पूजा अर्चना के बाद प्रदक्षिणा लेनी चाहिए, पूजा घर में मुर्तिया 11 इंच से निचे का ही रखना चाहिए । तथा खड़े हुए गणेश, लक्ष्मी, सरस्वती घर में नहीं होनी चाहिए, तथा पूजा स्थान के अलावा अगर कही चित्र लगते हों तो इसकी दृष्टि आप से बार – बार सिधी नहीं मिलना चाहिए । जब सोने को तैयार हों तो पहले दस मिनट उलटे हाथ की तरफ करवट सोयें तथा बाद में सुबह तक सीधे हाथ की करवट लेकर सोयें । पलंग रूम में कोने में नहीं लगायें तथा दीवार के तरफ भी 6 इंच कम से कम छोड़कर लगावें, शयन कक्ष की ऊपर की छत विल्कुल प्लेन होनी चाहिए, पलंग रूम में इस तरह लगायें की सिर की तरफ प्लेन दीवार हो टेढ़ा – मेढ़ा न हो । भोजन बनाते समय मुंह केवल पूर्व दिशा की तरफ होना चाहिए । शौच करते समय मुंख केवल पश्चिम या उत्तर दिशा में होना चाहिए, मुख्य तिजोरी बीच में पूर्वाभिमुख करके रखें, उसके अन्दर दो डिब्बे रखें एक अचल रकम रखकर बन्द कर देवे तथा दुसरे को खुला रखें, नियमित खर्चे के लिए रकम डालते रहें, निकालते रहें । तिजोरी दीवाल से 6 इंच छोड़कर रखें दीवार सटाकर नहीं रखें, सुबह पलंग से उठते समय सीधे घर से बाहर निकलते समय पहला पैर उल्टा ही निचे रखें । कार्यालय या घर से बाहर जाते समय या तो पूजा घर से या अपने शयन कक्ष से सीधे बाहर निकलें, निकलते समय बात नहीं करें तथा निकलते वक्त घर का कोई भी सदस्य आपको किसी भी कार्य के लिए टोके नहीं इसका भी विशेष ध्यान रखें । घर से निकलते समय कार, स्कूटर सीधा निकालें । घर से बाहर निकलते समय पचास कदम पूर्व या उत्तर की सड़क की तरफ ही जाएँ ये नियम जाने के लिए ही है आने के लिए नहीं है । घर के भीतर कांटे वाले, दूध वाले, फल वाले पेड़ –पौधे नहीं लगावें । नहाते समय या सोते समय उल्टे वस्त्र उतारकर नहीं छोड़ें । तथा नहाना एवं सोना कपड़े पहनकर ही करें । रात को सोते समय दस मिनट इष्ट देवता का ध्यान करना चाहिए तथा इसके उपरान्त ही सोयें । किसी विशेष यात्रा पर घर से निकलते समय रात्रि एवं दिन के ठीक बारह बजे का समय त्याग दें एवं समय के अनुसार शुभ मुहूर्त में घर से बाहर निकलें ।इन सभी नियमों का ध्यान रखना चहिए ताकि वास्तु का पूर्णतया आप को लाभ मिल सके ।

5.2.1 वास्तु का जीवन पर प्रभाव

कभी –कभी सभी प्रयास सही रूप से करने के वावजूद भी जीवन में बार-बार अनहोनी घटनाएं घटती रहती है । पूर्ण सजगता एवं परिश्रम से कार्य करने के वावजूद असफलता मिलती है । घर में पारिवारिक सदस्यों में आपसी ताल –मेल नहीं होना, एक ही व्यक्ति एक ही कारखाने में एक के अपेक्षा से अधिक लाभ कमाता है तथा दूसरा खाने के विना तरसता है । हजारों निर्माण कार्य निर्माण होते – होते रुक जाते हैं । घर में विकलांग सदस्यों का जन्म होना, अथवा बार –बार हाथ, पैर टूटना, अकाल मृत्यु होना, आग लगना, इन सभी बातों की जानकारी हमें वास्तु केआधारभूत सिद्धान्त से ही मिलना सम्भव होता है । मकान के स्थिति का हमारे, शारीरिक,मानसिक एवं आधात्मिक विकास से गहरा सम्बन्ध है । वास्तुशास्त्र का साधारण सा सम्बन्ध भवन निर्माण एवं आवास व्यवस्था से है, वास्तुशास्त्र शिल्प कला एवं अपने आधारभूत सिद्धान्तों पर अडिग है । मानव का आवास श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, सुखदायी एवं निरापद होना चाहिए । वास्तुशास्त्र को पौराणिक ज्ञान –विज्ञान का एक स्तम्भ समझना चाहिए । वास्तुशास्त्र वस्तुतः हमारे महान देश भारतवर्ष का अत्यन्त प्राचीन शास्त्र है वास्तुशास्त्र का गहन अध्ययन करने से पता चलता है कि मानव के जीवन में आचार –विचार पर सम्मान व आर्थिक

स्थितियों को भी प्रभावित करता है। यहाँ तक कि वास्तुशास्त्र में विना तोड़ –फोड़ किये ही अन्य विधियों से समस्याओं निदान करने में सक्षम है जैसे – दर्पण से, रंगों द्वारा, रंगीन शीशे से आदि। विदेशों में भी वास्तुशास्त्र को लेकर सारगर्भित चिन्तन हुआ है। अमेरिका, जर्मनी आदि देशो में भवन विज्ञान का महिमा मण्डन किया गया है। और इसके ज्ञान का आंकलन किया गया है। अब विदेशों में भवन निर्माण के समय वास्तुशास्त्र के नियमो का ध्यान रखा जाता है। वास्तु शास्त्र अरब में रेत शास्त्र के नाम से, लैटिन में 'जिओलेर्शिय' के नाम से, चीन में 'फेंगशुयी ' के नाम से तिब्बत में बगुबा के नाम से जाना जाता है।

मानव वास्तु सम्बंधित त्रुटियों को सुधार कर वास्तुशास्त्र के नियमानुसार भवन निर्माण कर के सुख शान्ति और समृद्धि प्राप्त कर सकता है। यह शाश्वत सत्य है। प्रत्येक व्यक्ति का सपना होता है की वह अपनी कल्पना के अनुरूप रहने का एक सुन्दर घर बनाये। इस सपने को साकार रूप देने के लिए वह कदा परिश्रम कर धन की व्यवस्था करता है। रहने के लिए भवन के निर्माण का कार्य सोच समझकर, विचार विमर्श कर के, प्लानिंग कर आवश्यक पहलुओं का ध्यान रखकर ही भवन निर्माण का कार्य शुरू कराया जाय तो सुविधा रहती है। भवन निर्माण से पूर्व यह मानस बनाना आवश्यक है कि निर्माण कहां कराया जाय, मकान स्थाई कार्यक्षेत्र से जितना नजदीक होगा उतनी ही सुगमता से आप अपना कार्य कर सकेंगे। प्राय: जल्दीबाजी में भूमि प्राप्त करने के प्रलोभन में आकर लोग, जमीन खरीदकर करवायी कर लेते हैं। एवं मकान बनवाने के सुख की जगह खुद को विवाद के घेरे में खड़ा कर देते हैं। शहरों में प्राय: अधिकतर लोगों को अन्य स्रोतों पर ही निर्भर रहना पड़ता है, जिसमें विभिन्न हाउसिंग सोसाईटी, कम्प्लेक्स, बिल्डर्स आदि आते हैं। इन एजेंसियों में धन व्यय करने से पूर्व आप को भलीभांति इसकी विश्वसनीयता दर इत्यादि का पता कर जमीन खरीददारी का कार्य करना चाहिए।

मकान बनाने से पूर्व मकान का नक्सा, ड्राइंग रूम, इत्यादि विषयों का विचार करके करना चाहिए अक्सर ऐसा होता है कि भवन बनवाने के विविध विचारों से व्यक्ति अनभिग्य होता है। चूँकि ऐसे कार्य जिसमें आनेवाली दिक्कत का पूर्वानुमान न हो तो निश्चित रूप से महंगे पड़ते हैं। निर्माण कार्य में पानी का प्रबन्ध सुनिश्चित होना चाहिए क्योंकि मकान निर्माण में पानी का प्रवन्ध सुनिश्चित होने से एक पंचतत्व की प्राप्ति हो जाती है।तथा वह इसलिए क्योंकि मकान निर्माण में पानी का उपयोग रीढ़ की हड्डी के समान है।

घर का ले आउट इस प्रकार रखें की मौसम के अनुरूप धूप, हवा इत्यादि की सुगमता रहे, जहां सर्दियों में धुप की आवश्यकता हो वहां दक्षिण दिशा में मकान का खुला होना उत्तम होता है। खिडकियां इत्यादि उस क्षेत्र में चलनेवाली हवावों के अनुरूप ही लगानी चाहिए। नीव को बहुत गहरा ले जाना केवल लागत को बढ़ाना है। यदि तीन फिट की खुदाई के बाद आप देंखे की नीव में पत्थर नहीं आता है तो इंजीनियर से मौके स्थित का निरीक्षण कराकर मकान के भार के अनुरूप नीव की चौड़ाई बढ़ा लें। इससे मकान का भार का विवरण नीव में अधिक क्षेत्र में हो जाता है। विभिन्न तरह की नीव की मिट्टी पत्थर इत्यादि के भार सहने की क्षमता के अनुरुप नीव की चौड़ाई बढ़ाई जाती है। जहां दीमक का खतरा बना रहता है वहां नीव में दीमक को मारने वाले किट नाशक का छिड्काव नीव भरने से पहले करना चाहिए। मकान का प्लाट लेवल, आगे वाले सड़क के लेवल से कम से कम डेढ़ फिट ऊँचा होना चाहिए। प्लीथ लेवल पर डी .पी .सी (डेम्प प्रूफ कोर्स) अवश्य डलवायें। इससे जमीन का सीलन ऊपर दीवार में नहीं आता है।

गृहिणियों का अधिक समय रसोई या वेडरूम में व्यतीत होता है, अत; इसका निर्माण करते समय इनका आकार, हवा, रौशनी इत्यादि का ध्यान रखना चाहिए। मकान उतना ही बड़ा बनवाना चाहिए जितनी आप की आवश्यकता हो, वैभव दिखाने के लिए बड़े मकान अत्यधिक रख – रखाव के कारण अनावश्यक उपयोग का कारण प्रतीत होने लगता है।उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर भवन निर्माण का कार्य आरम्भ करने से लागत में वृद्धि व कई मानसिक परेशानियों से बचा जा सकता है।

5.2.2 गृह दिशा एवं पञ्चभूत का सिद्धान्त

वृहद्वास्तुमाला के अनुसार भूखण्ड के विभिन्न दिशाओं एवं उप-दिशाओं के क्षेत्रों में किस प्रकार उपयोग के लिए स्थान को उल्लिखित किया गया है। अर्थात पूर्व दिशा में लक्ष्मी का गृह, आग्नेय कोण में रसोई गृह, दक्षिण दिशा में शयन गृह, नैऋत्य कोण में शस्त्रागार, पश्चिम में पाकशाला वायव्य कोण में धनागार, उत्तर में द्रव्य स्थान, इशान कोण में देवता गृह, पूर्व और अग्निकोण के बीच में दही मथने का स्थान, दक्षिण और आग्नेय कोण में घी रखने का स्थान, दक्षिण और नैऋत्य कोण के बीच में शौचालय, नैऋत्य कोण और पश्चिम के बीच स्वाध्याय गृह, पश्चिम और वायव्य कोण के बीच में कोप भवन और औषधि गृह, ईशान और पूर्व के बीच में सर्ववस्तुसंग्रह भण्डार गृह, इसप्रकार सोलह गृहों का विधान है।

यह सत्य है कि किराये के मकान में भवन स्वामी की स्वीकृति के बिना कोई संशोधन नहीं किया जा सकता है।प्राय: देखा गया है कि वास्तु नियमों के अनुकूल बने भवन में किरायेदार भी सुखी और सम्पन्न होते हैं।भवन का उत्तर –पूर्व का भाग अधिक खाली रखें, दक्षिण – पश्चिम के भाग में अधिक सामान रखें। पानी की सप्लाई उत्तर पूर्व से करें। शयन कक्ष की सेटिंग ऐसे करें की उस पर सोने पर अपना सिर दक्षिण दिशा में हो और सोते समय पैर उत्तर दिशा में हो। भोजन दक्षिण पूर्व की ओर मुख कर के करें। पूजा स्थल उत्तर पूर्व की दिशा में रखें। पानी पिते समय मुख उत्तर पूर्व की ओर रखें।भवन तैयार करते समय इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए और भी वास्तुशास्त्र के आधारभूत सिद्धान्त बहुत ही सारगर्भित है जिसको समझना अति आवश्यक है। भवन तैयार करते समय इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए। अगर भवन के किसी भाग को हम चाहते हुए भी उसके अनुकूल दिशा में नहीं बना पा रहे हैं तो हम उनको बाँट कर 8 दिशाओं में स्थान सुनिश्चित करें । मकान का रूप वास्तुशास्त्र के अनुसार कैसा होना चाहिए उसको यहाँ पर बताया जा रहा है।

उत्तरपूर्व	बालकनी	पूर्व,दक्षिण,पूर्व उत्तर, पश्चिम	बालकनी
उत्तर पूर्व	तलघर	उत्तर,पश्चिम	गैराज
उत्तर,उत्तर,पूर्व	दरवाजे	उत्तर–पश्चिम दक्षिण-पूर्व	ड्राइंग रूम
दक्षिण-पश्चिम,दक्षिण-पूर्व	ड्रेसिंग रूम	उत्तर-पश्चिम	मनोरंजन कक्ष
दक्षिण-पूर्व,दक्षिण-	भोजन कक्ष	उत्तर-पश्चिम	भंडार गृह

पश्चिम			
दक्षिण-पूर्व,उत्तर-पूर्व	खुला स्थान	उत्तर-पश्चिम,दक्षिण-पूर्व	अतिथि कक्ष
दक्षिण-पूर्व,पश्चिम	रसोई घर	दक्षिण –पूर्व	बिजली व्यवस्था
उत्तर-पश्चिम	परामर्श कक्ष	उत्तर-पूर्व	खुला स्थान
उत्तर-पूर्व	गैराज	दक्षिण-पूर्व,उत्तर-पश्चिम	सेवक कक्ष
दक्षिण-पश्चिम	सीढियाँ	दक्षिण-पश्चिम	भंडार गृह
उत्तर-पूर्व,उत्तर	पूर्व-पश्चिम	अध्ययन कक्ष	उत्तर तिजोरी
उत्तर-पूर्व	पूजा घर	उत्तर-पूर्व,दक्षिण तथा पश्चिम	पेड़-पौधे
दक्षिण-पूर्व,उत्तर-पश्चिम	मूत्रालय	उत्तर-पूर्व	बरामदा
उत्तर-पश्चिम	जल भंडार		

अब भू-खण्डों के मुख के अनुसार निम्नलिखित विवरण प्रस्तुत है –

1. उत्तरमुखी 2. ईशान मुखी 3. पूर्व मुखी 4. आग्नेय मुखी

5. दक्षिण मुखी 6. नैऋत्य मुखी 7. पश्चिम मुखी 8. वायव्य मुखी

भवन का प्रारूप बनाते समय 5 मुख्य सिद्धान्तों को ध्यान में रखना चाहिए। मानव शरीर पञ्चतत्व जल,अग्नि,वायु,आकाश तथा पृथ्वी से निर्मित है, और जब तक इसका संतुलन बना रहता है तब तक जीवन स्वस्थ रहता है। इसी प्रकार भवन निर्माण में भी इन्हीं तत्वों को ध्यान में रखा जाता है।

पृथ्वी – हमें सबसे पहले पृथ्वी का गुणात्मक दृष्टि से तथा आकार एवं प्रकार को ध्यान में रख कर करना आवश्यक है। पृथ्वी तत्व की शुद्धता एवं गुणवत्ता के लिए मिट्टी का रंग, उसकी गन्ध, उसकी आर्द्रता, उर्वरा शक्ति, मिट्टी की खाद के आधार पर करना चाहिए,ताकि पृथ्वी तत्व का भवन निर्माण के लिए सही चयन किया जा सके।

जल – भूमि का निर्माण करने से पूर्व जल की व्यवस्था करनी चाहिए, क्योंकी प्राणियों का आवास जल परक होंमे के कारण इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। उत्तर-पूर्व में जल का संशाधन तैयार करना चाहिए। ट्यूबवेल भूखण्ड के ईशान कोण में बनाना चाहिए। ध्यान रखे की भवन के ईशान कोण और भुखण्ड के ईशान कोण को मिलाने वाली रेखा पर ट्यूबवेल ना खोदा जाए।

अग्नि- अग्नि मानव जीवन का मुख्य आधार है। वैदिक काल में अग्नि को देव रूप मानकर यज्ञों द्वारा पूजन और वरुण,इन्द्र,अग्नि, मरुत,विष्णु, रुद्र,पूषा आदि विभिन वैदिक कालीन

देवताओं की आराधना की जाती है। पूर्व दक्षिण दिशा तेज के लिए भवन निर्माण के समय अग्नि स्थान का निर्धारण के समय दक्षिण पूर्व दिशा के मध्य अग्नि कोण में निर्धारित करना चाहिए। अग्नि का स्थान रसोई घर के रूप पर निर्धारित किया जा सकता है।

वायु- स्वच्छ वायु का सेवन स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण होता है। निर्माण के समय वायु संचरण के लिए स्थान निर्धारित करना चाहिए। स्वस्थ्य की दृष्टि से निर्माण के अवसर पर वायु और प्रकाश का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है। पश्चिम उत्तर दिशा के बीच का स्थान वायव्य कोण के नाम से जाना जाता है, वायु के लिए विशेष रूप से यह जानना आवश्यक हैं की भवन के पश्चिम और उत्तर दिशाओं में वायु सेवन का स्थान रखना चाहिए। वायु तत्व की प्राप्ति इस दिशा की ओर से प्राप्त करना स्वस्थ्य के लिए उत्तम होता है।

आकाश- आकाश शब्द से भवन निर्माण के लिए खुलापन रखना चाहिए। भवन में कक्षों की ऊंचाई कक्ष के अनुपात से निर्धारित करनी चाहिए। अधिक एवं न्यून ऊंचाई के कारण आकाश तत्त्व प्रभावित होता है। वास्तुशास्त्र में विभिन्न कक्षों का दिए हुए निर्देशों का अवश्य पालन करना चाहिए। वास्तु में चारों दिशाओं तथा उनके चारों सहायक कोणों का विशेष महत्व है। अतः भवन निर्माण के समय इसका ध्यान रखना चाहिए।

5.2.3 वास्तु और भवन निर्माण का सिद्धान्त

भवन बनाते समय वास्तुशास्त्र निर्दिष्ट सूत्र और सिद्धान्तों के आधार पर ही बनना चाहिए ।वास्तुशास्त्र के विधियों का उल्लेख आचार्यो ने किया है जो की यह प्रतिपादित किया जा रहा है गृहारम्भ में सर्व प्रथम शिलान्यास करना चाहिए, जिसका मुहूर्त किसी ज्योतिषी से परामर्श करके निर्धारित किया जाता है ।शिलान्याश पांच शिलाओं का स्थापना किया जाता है, जिस दिशा में शिलान्यास किया जाता है, उसका निर्णय सूर्य की राशि के अनुसार दो दिशाओं के मध्य में किया जाता है। गृहारम्भ कार्य के लिए विशेष निर्णय इसप्रकार समझना चाहिए। सिंह, कन्या, तुला राशि के सूर्य में, पूर्व दक्षिण भाग में अग्निकोण में ।वृष, मिथुन, कर्क राशि के सूर्य में दक्षिण भाग में नैऋत्य कोण में, कुम्भ, मीन, मेष राशि के सूर्य में वायव्य कोण में। वृश्चिक, धनु, मकर राशि के सूर्य में उत्तर पूर्व अर्थात ईशान कोण में शिलाओं को स्नान इत्यादि कराकर निर्धारित मुहूर्त में स्थापना कर के भवन निर्माण किया जाता है। भवन निर्माण के लिए यह आवश्यक है कि भवन में निर्मित किये जाने वाले कक्षों की माप और दिशा आदि का विवरण तथा निर्माण के पूर्व तैयारी करना आवश्यक होता है और उसको ही आधार मानकर भवन निर्माण करना चाहिए। भवन में सबसे पहले दीवारों का ध्यान रखना चाहिए। उत्तर एवं पूर्व की दीवारों की अपेक्षा दक्षिण –पश्चिम के दीवारों की ऊंचाई एवं मोटाई अधिक रखना चाहिए। प्राचीन काल में भवन निर्माण के लिए भूभाग को कक्षों में विभाजित किया जाता था। यद्यपि वास्तुशास्त्र के अनुसार 16 खण्डों में कक्षों आदि का विभाजन कर प्रत्येक कार्य के लिए अलग –अलग दिशाओं का उल्लेख किया गया है, इसलिए इस बात का ध्यान देना चाहिए कि कमरों का निर्माण इस प्रकार करना चाहिए कि वह वास्तु के अनुरूप हो जैसे – अग्नि का अग्निकोण में, पूजा का कक्ष ईशान कोण इत्यादि इन सभी विषयों की चर्चा पूर्व के पाठ में किया जा चुका है, परन्तु यहां पर हम सभी को वास्तु के सिद्धान्तों को समझने के लिए 16 गृहों के बारे में जानना आवश्यक है इसमें प्रमुख है, रसोईघर –स्वागत कक्ष –(ड्राइंग रूम)-भण्डार गृह – अध्ययन कक्ष –भोजनालय – देवस्थान –स्नानघर –शयन कक्ष – छत पर पी की टंकी – शौचालय – सीढियाँ – पुस्तकें कहां रखें – धन या तिजोरी कहां रखें – घर में कौन सी तस्वीर

रखें – विद्युत एवं प्रकाश – दो मंजिल – तहखाना भवन की ऊंचाई –शयन कक्ष का रंग कैसा हो ? शयन कैसे करें ? वास्तुदोष और आपका शयन कक्ष –घर में लगाये गये उचित वृक्ष – इत्यादि इन सभी बातों को वास्तु के आधारभूत सिद्धान्त ही समझना चाहिए इसके अनुरूप भवन निर्माण करने से सुख और शान्ति मिलती है।

5.3 वास्तुदोष और शयन कक्ष

वास्तुशास्त्र के अनुसार बने हुए घर में वास्तु कला के अनुसार शयन कक्ष बहुत ही लाभदायक होता है।जिस प्रकार एक स्वस्थ शरीर में ही आत्मा निवास करती है, ठीक इसी प्रकार वास्तु कला के अनुरूप बनें आदर्श शयन कक्ष में ही अच्छी तरह नींद आती है। रात्रि में आराम से आने वाली निद्रा प्रात: तरोताजा बना देती है। क्या आप जानते है कि आज कल अधिकांश लोग अनिद्रा के कारण रोगी बनते चले जा रहे हैं। वास्तुशास्त्र के अनुसार ऐसे तो रसोई घर, ड्राइंग रूम – भंडार गृह – आदि सभी महत्वपूर्ण है, लेकिन शयन कक्ष सबसे अधिक मत्वपूर्ण है क्यों कि गहरी निद्रा के बाद ही हम शेष सभी घरों का आनन्द लिया जा सकता है। प्राय: यह कहा जाता है कि जागृत अवस्था में किया गया कार्य उस व्यक्ति के व्यक्तित्व से पहचाना जा सकता है। उसकी आदतों को भी रेखांकित किया जा सकता है। परन्तु बहुत सी बातें आपकी शयन मुद्राएँ यानि आप के सोने का तरीका भी बताता है। मनोवैज्ञानिक लोग भी अपने मत को इसप्रकार बताते हैं कि व्यक्ति का शयन कक्ष और उसकी शयन मुद्राओं को देखकर उसके बारे में सहजता से अनुमान लगाया जा सकता है, तथा शयन कक्ष में अगर कोई हाथ, पैर सिकोड़ कर, पैरों को पेट में लगाकर सोते हैं वह भीरु होते हैं। वास्तु के अनुसार यह भी एक दोष है, जिसका परिणाम ऐसे व्यक्ति के जीवन में संघर्ष हमेशा बना रहता है। तथा अकेले में रहने से इनको भय लगता है, यह अकेले यात्रा भी नहीं कर सकते। और ना ही अँधेरे नमे इनको नींद ही आती है, ऐसे लोगों में अविश्वास की भवन पाई जाती है। ऐसे व्यक्ति शारीरिक रूप से भी अस्वस्थ एवं निर्बल पाए जाते हैं। स्वभाव से भी किसी निर्णय पर न पहुचने वाले और हीनभाव से ग्रसित पाए जाते हैं, शयन कक्ष में पैर पेट से मिलाकर सोनेवाली महिलाएं प्राय: भयानक स्वप्न देखती हैं। और कई बार चीखकर जग जाती हैं, दोषपूर्ण शयन कक्ष में ऐसा होने के बाद काफी समय तक वे सामान्य स्थिति में नहीं आ पाती। शयन कक्ष का निर्माण बदल के कर देने पर पुनः सभी स्थितियाँ ठीक हो जाती है। पीठ के बल सीधे सोने वाले पुरुष वहिर्मुखी प्रवृत्ति के, संकोच से से दूर, स्वार्थी तथा अपनी बातों को स्पष्ट कहने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति प्राय: लापरवाह होते हैं एवं पत्नी के प्रति प्रेम का अभव पाया जाता है, शारीरिक दृष्टि से सुदृढ़ एवं स्वास्थ्य भी सामान्य होता है परन्तु इनमें संवेदना प्रचुर मात्रा में व्याप्त होता है। पीठ के बल सोनेवाली महिलाएं प्राय: स्वार्थी प्रवृति की होती हैं। जो महिलाएं दायीं करवट सोती है, वे स्वभाव से कर्कशा और इस प्रकार का आचरण करने वाली होती हैं जिससे जीवन साथी को कष्ट होता है, साथ ही इस तरह के स्त्रियों में पुरुषो जैसे गुण भी पाए जाते हैं ।

कुछ मुहँ खुला रख कर आधी आँखें खोल कर सोते- सोते बड़बड़ाते या पैर के निचे तकिया लगाकर या फिर तीन- चार तकिया लगा कर सोते हैं। इन प्रत्येक मुद्राओं का अर्थ जैसे – मुहँ खुला रख कर सोने वाले ढीले – ढाले परन्तु अधिक परिश्रमी होते हैं, कभी – कभी ऐसे लोग मानसिक तनाव के शिकार होते हैं। अधिक तकिया का प्रयोग करने वाले व्यक्ति स्वभाव से दिखावा करने वाले या अधिक बनावटी होते हैं। सोते समय कुछ की आँखे आधी खुली रहती है, एसी आँखों वाले स्वभाव से सहयोगी होते है, परन्तु कुछ लोग ऐसे भी पाए जाते हैं जिनमें

लालच की भावना कूट- कूट कर भरी होती है। नींद में बड़बड़ाने वाले लोग, मानसिक दबाव से पीड़ित होते हैं । ऐसे लोग बड़बड़ाते हुए अपनी परेशानी को भी बड़बड़ाया करते हैं और उससे मुक्ति पाने के अप्रत्याशित उपायों को सरलता पूर्वक सुना जा सकता है। ऐसे व्यक्ति पेट में कीड़े के भी रोगी होते हैं, पाँव के नीचे तकिया लगाकर सोने वाले को अगर कल्पना लोक का वासी कहा जाए तो गलत नहीं होगा। इस शयन मुद्रा वाले लोग यथार्थवादी नहीं होते, कुछ लोग सोते समय हाथ पैर इधर- उधर फेकते रहते हैं, ऐसे लोगों के बारे में वास्तुविज्ञों का कथन है कि ये लोग असूरक्षा की भावना से घिरे रहते है। हाथ पैर फेक कर वह सुरखित माध्यम की खोज को दर्शाते हैं ।

यह सब दोष प्रायः वास्तु शास्त्र के अनुरूप नहीं बने हुए शयनकक्ष अथवा किसी रोग की ओर इशारा करता है, जहा तक शयन कक्ष की बात है,वह तो वास्तुशास्त्री से सलाह लेने पर ठीक हो जाएगा, तथा रोगों के लिए डॉक्टर से सलाह लेना चाहिए। शयन कक्ष से सम्बन्धित समस्या से छुटकारा पाने के लिए अथवा बिना तोड़ -फोड़ के ठीक करने के लिए आप शनिवार के दिन (केवल शुक्ल पक्ष) में अभिमंत्रित रुद्राक्ष या स्फटिक की माला से निम्नलिखित मन्त्र का पांच माला जप आने वाले शनिवार तक करे, जाप के समय केवल गुलाब की अगरबत्ती अपने सामने जलावे तथा इस मन्त्र का जाप करे – मन्त्र

ॐ नमः स्वप्न चक्रेश्वरी स्वप्ने अवतर अवतर गतं।

वर्तमान दोषानि कथय कथय स्वाहा ॥(वास्तुदोषकारण निवारण पृष्ठ 86)

घर में अगर गलत दिशा में सोफे फर्निचर रखा होता है वह भी कष्टकारक होता है। अतः सोफे या फर्नीचर उत्तर या पूर्व की दीवार के पास ना रखें। सोफे फर्नीचर दक्षिण या पश्चिम दीवार के सहारे रखें । यदि आपके पास जगह की कमी हो तो जिसके कारण सोफे या फर्नीचर पश्चिम या दक्षिण की ओर नहीं रख सकते हैं तो 9 इंच की दुरी पर उत्तर या पूर्व की दिशा में रख सकते है। इससे वास्तु दोष का प्रभाव प्रायः न के बराबर होता

है। प्रायः उत्तर और पूर्व की दिशा खाली रखनी चाहिए, इससे लक्ष्मी का आगमन होता है। स्वास्थ्य भी ठीक रहता है। ये सभी नियम सभी जगह लागू करें तो अवश्य ही शुभ फल मिलेगा।

5.3.1 घर के सामने लगाये जानेवाले उचित वृक्ष

हालां कि वास्तुशास्त्र वह विद्या है जो कि मानव जीवन के लिए ही नहीं अपितु समस्त प्राणियों के लिए वरदान है एवं वास्तुशास्त्र का वास्तविक आधारभूत सिद्धान्त सम्पूर्ण वैज्ञानिक विन्दुओं पर आधारित है। जैसे यह सभी जानते हैं कि संसार की गुरुत्वाकर्षण चुम्बकीय शक्ति उत्तर दिशा में है तथा शक्तिपुंज पूर्व दिशा में होता है।अतः वह भवन एवं व्यापारिक प्रतिष्ठान, कल कारखाने विशेष लाभप्रद होते हैं जिनका अधिकांशतः भाग उत्तर और पूर्व में खाली होता है। तथा यह स्वयं का अनुभव है वास्तु निरिक्षण के अन्तर्गत उत्तर दिशा व पूर्व दिशा का आधिक भाग खाली होना सर्वथा श्रेष्ठ व प्रगति सूचक होता है। जिन आवासीय भवनों व व्यापारिक प्रतिष्ठानों में दक्षिण पश्चिम के तरफ खुलापन पाया गया है वह आवासीय भवन, प्रतिष्ठान आदि में अनेको समस्याएं पाई जाती है ऐसे अनेको तथ्य जो देखने के लिए बहुत छोटे है परन्तु उसका सही उपयोग किया जाए तो अधिक लाभ प्राप्त होगा। जी हां आपलोगों का इशारा घर में

लगाये जाने वाले वृक्षों को बताया जा रहा है। तरह- तरह के कंटीले वृक्षों को लगाने का आज लोगों में विशेष शौक है, जो की सर्वथा अशुभ होते है। परम्परा के अनुसार सर्वश्रेष्ठ वृक्ष तुलसी का है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को अपने घर में तुलसी का वृक्ष जरुर ही लगाना चाहिए। वृक्ष सम्पदा मानव के लिए प्राण देने वाली शक्ति है किन्तु जो वृक्ष अशुभ फलो को प्रदान करता है उसको घर में कभी भी नही लगाना चाहिए। हालाँकि अशुभ वृक्षों का भी वास्तुशास्त्र के नियमानुसार विशेष प्रभाव होता है। घर के पास अशुभ वृक्ष होते हैं, तो वह मनुष्य को अनेकों प्रकार की व्याधि, काष्ट, रोग अशान्ति उत्पन्न करते रहते हैं। वहीं पर शुभ वृक्षलगाने का फल धन वृद्धि, संतान वृद्धि,आयु वृद्धि और स्वस्थ्य जीवन में लाभप्रद होता है। यद्यपि मत्स्य पुराण में शुभ-अशुभ वृक्षों का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है तथापि यहाँ कुछ वृक्षों के बारे जानना आवश्यक है, जिसमें अशुभ वृक्षों की बात करें तो वह वृक्ष सर्वथा अशुभ है जिसमें अच्छे एवं खुशबूदार फूल ना आते हो जैसे – कैक्टस, सेमल आदि अशुभ होते हैं। जबकि पुन्नाग, नीम, अशोक,आम, नारियल और अनार श्रेष्ठ होते हैं। पीपल,गुलर, बरगद अशुभ होते हैं। अंगूर की बेल, चन्दन का वृक्ष भवन के प्रत्येक क्षेत्र में श्रेष्ट होते हैं। बेर, बबूल,निम्बू, करूज़ा, माल्टा यह वृक्षा सर्वदा अशुभ होते है। ग्वारपाठा का वृक्ष अशुभ होते हैं। रायबेल, मोगरा,चमेली सर्वथा श्रेष्ट होता हैं। मोलश्री, हरसृंगार, खुशबुयुक्त गुलाब श्रेष्ट होता हैं। कैथ, कजोड़, करील अशुभ होता हैं। बहुत से मुख्य द्वार पर कटीली बंगन बेलियाँ की बेल चढ़ी होती है जो की सर्वथा अशुभ फल देने वाली होती हैं।

प्रायः यह देखा गया है कि जिसके जन्म कुण्डली में बृहस्पति अशुभ होता है तो संतान उतपन्न होने में बाधाएं आती हैं। इसके लिए यह समझना चाहिए कि इस जन्म में या पूर्व जन्म में यह व्यक्ति फलदार वृक्षों को कटवाया हैं। अगर शुक्र बाधक है तो यह जानना चाहिए कि यह जातक पुष्प धारी वृक्षों को कटवाया है। अगर शनि बाधक है तो समझे की पीपल वृक्ष को काटने का फल है। अब आइये जानते हैं वृक्षों को लगाने से मिलने वाले पुण्य फल जैसे – एक पीपल के वृक्ष,एक नीम का वृक्ष एक बरगद का वृक्ष, 10 इमली का वृक्ष, कैथ का वृक्ष, बिल्व का वृक्ष आवलें के 3, पांच वृक्ष आम के लगाने वाला व्यक्ति पुण्यात्मा होता है और उसे कभी नरक का दर्शन नहीं होता है। जो व्यक्ति हवन नहीं करता, जो पुत्रहीन है अगर वह आम का बागीचा लगाता है तो ठीक उसी प्रकार स्वर्ग प्राप्ति का अधिकारी बनता है जैसे पुत्र द्वारा किये गए श्राद्ध कर्मो से। जो मनुष्य सड़क के किनारे सुन्दर और उपयोगी वृक्षों को लगता है वह चारों युगों तक सर्व सुख संपन्न होता हैं। वृक्षा रोपण से अधिक पुण्य लता रोपण से मिलता है, संभवतः किसी निराश्रित व्यक्ति को आश्रय प्रदान करने के जैसे होता है क्योंकि बेल सदैव सहारे के अधीन होता है। चन्द्रमा जब हस्त, पुष्य, अश्विनी, तीनों उत्तरा, रोहिणी, विशाखा, मृगशिरा, मूल, शतभिषा,नक्षत्रों में संचार करें तो वृक्ष लगाना शुभप्रद होता है। बृहस्पति के केन्द्र में स्थित हो ऐसा लग्न हो, शुक्र उत्तम स्थान में स्थित हो,चन्द्रमा की राशि कर्क, वृश्चिक या मीन हो, क्योंकि ये तीनों जल राशियां हैं तथा जल के बिना वनस्पतियों का पोषण संभव नहीं है, चतुर्थ स्थान में शुभ ग्रहों का योग हो, चतुथ स्थान भूमि या पताल का स्थान हैं अतः शुभवार शुभ लग्न में वृक्षा रोपण करना चाहिए। विशेष योग सोमवार के दिन मूल नक्षत्र हो, धनु लग्न हो वृहस्पतिवार का दिन हो, रेवती नक्षत्र हो तथा वृहस्पति लग्न में स्थित हो तो वृक्ष रोपना चाहिए। ऐसे वृक्ष जिनके अंगो से दूध निकलता हो, घर के निकट शुभ नहीं होता है इससे धन नस्ट होता हैं। दूध वाले वृक्ष अगर आग्नेय कोण में लगाये गए हों तो ये मृत्यु कारक माने जाते है। कांटेदार वृक्ष भय पैदा करता है, कोर्ट –कचहरी,मुकदमेबाजी, पुलिस केस

इत्यादि का भय हो सकता है। कांटेदार वृक्ष संतति को भी कष्ट पहुंचाता है। पीले रंग के पुष्प वाले वृक्ष भी घर के समीप शुभ नहीं माना गया है। बिल्व पत्र शमीं या अशोक, मोलश्री, पुन्नाग, चम्पक के वृक्ष, अंगूर की बेल, चन्दन का वृक्ष, अनार का वृक्ष, पिप्पली का बेल घर के निकट शुभ फलदायक है। पुन्नाग, अशोक, नीम, मौसमी, कटहल, काल के वृक्ष हो तो वृहत्संहिता के अनुसार काटेदार वृक्षों का अवगुण मिटाने वाले होते हैं।ऊँचे व घने वृक्ष दक्षिण, पश्चिम भाग में लगाने चाहिए। पेड़ भवन में इस प्रकार लगाएं और उनमें दूरी इतनी रखें कि प्रात: से तीसरे प्रहर भवन पर उसकी छाया न पड़े। पीपल का वृक्ष पश्चिम, बरगद का पूर्व, गुलर का दक्षिण और कैथ का वृक्ष उत्तर में लगाना चाहिए, अन्य वृक्ष किसी व दिशा में लाभदायक होता है। इस प्रकार आपको गृह के पास वृक्ष लगाने का सिद्धान्त समझना चाहिए।

5.3.2 वृक्षों के सामने दो मंजिल गृह विचार

वास्तु के अनुसार भवन के दक्षिण या पश्चिम दिशा के भाग को ऊँचा रखा जाता है। अत: दो मंजिल गृह का निर्माण केवल दक्षिण अथवा पश्चिम दिशा में ही करना चाहिए। चूँकि पृथ्वी के दोनों ध्रुवो के बीच चुम्कीय बल रेंखायें हैं जो मानव शारीर पर स्पस्ट प्रभाव डालती है तथा धरती के विभिन्न स्थल है जो मन पर अपना सूक्ष्म प्रभाव डालते हैं। इन्हीं सब प्रभावों को पहचान कर उचित अनुसन्धान कर के बनाये हुए भवन को वास्तुशास्त्र के आधारभूत सिद्धान्त समझना चाहिए। भवन के और उसके बाहर के सभी भौतिक, पराभौतिक और अध्यात्मिक प्रभावों के लाभों को उपलब्ध करने की कला ही वास्तुशास्त्र है इसीलिए, वस्तुसौख्यम में कहा गया है ‘ वस्तुशास्त्रं प्रवक्ष्यामि लोकानां हितकाम्यया ’ वास्तुशास्त्र वैज्ञानिक एवं तकनीकी सिद्धान्त केवल आवासीय सीमा तक ही प्रभावशाली नहीं है अपितु इसका प्रयोग औद्योगिक विकास व नगर तथा ग्राम परियोजना के रूप में भी समस्त मानव जाति के भौतिक व अध्यात्मिक कल्याण के लिए है। भारतीय जिवन पद्धति में धर्म, संस्कृति, विज्ञान एवं जिवन इन चारों क्षेत्रो का विस्तार समान रूप से है और उसका दृष्टिकोण समन्वय स्थापना के लिए किया गया है। सृष्टि के साथ अविरोध भाव प्राप्त करने की पद्धति ही समन्वय है। जिसका परिणाम है सद्भावना, सद्व्यवहार और सद्प्रेम। जिसका प्रभाव मानव जीवन पर ही नहीं अपितु प्रकृति एवं तत्वों पर भी पड़ता है, क्योंकि ये तत्व भी उतने ही सवेदनशील है, चेतन और जागरूक है जितने की हम जीवधारी मनुष्य। मानव जीवनशैली व तत्वों के साथ सामंजस्य व समन्वय ही वैदिक वास्तु का आधार है। जो आवश्यक शिवत्व का सूत्रधार भी है वास्तु अनुरूप आन्तरिक गृह- सज्जा भी मानव मस्तिस्क पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालता है। चित्र चरित्र का निर्माण करते हैं, अतः सौम्य सुखद संवेदनाओं के साथ घर का वातावरण अनुकूल व सुख – समृद्धिमय, मंगल भवन, बनाने के लिए वास्तुशास्त्र के आधारभूत सिद्धान्तों का पालन ही हितकर होगा तथा यहीं से शिवत्व का प्रस्फुटन होगा।

आज वास्तुविद वास्तु आंकलन में सौन्दर्य का तो ध्यान रखते है पर वास्तु के नियमों को न ध्यान देने के कारण वह कल्याणकारी नहीं होता है जबकि वास्तु के सिद्धान्त सरल व सहज रूप में अपनाये जाने वाले है। संतुलित अनुपात का ध्यान रखें क्योंकि जो भवन वास्तुशास्त्र के अनुकूल नहीं बनाया जाता है तथा अवास्तु की रचना की जाती है वह मनुष्य के मन और आत्मा को प्रसन्न रखने में असमर्थ होती है। जीवन में संयम और संतुलन नहीं रहता है जिसके अभाव में जीवन सुनियोजित नहीं बन पाता इस तरह सुख-शान्ति व सुरक्षा के साथ मानवीय सम्वेदनाओ के आँचल में पल्लवित व विकसित हो रही सात्विक समाज व रचना में

वास्तुशास्त्र की भूमिका अत्यन्त सारगर्भित है वास्तु निर्माण कार्य में वर्तमान समय में अत्यन्त मूल्यवान हो गया है और निर्माण के पश्चात् वास्तु दोस निकले और तोड़-फोड़ करनी पड़े तो वह अत्यन्त कष्टकारी होता है, आर्थिक बोझ भी बढ़ जाती है अतः उसको ध्यान में रख कर वास्तु निर्माण से पूर्व निम्नलिखित बिन्दुओं का विचार करें तो उत्तम होगा वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत निर्माण में सुधार आवश्यक है लेकिन उसपर गहन ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि उत्तर- पूर्व भाग में सुधार पुरुष को अच्छे परिणाम देता है जबकि दक्षिण –पश्चिम भाग महिला को अधिक प्रभावित करता है इसलिए ध्यान देना आवश्यक है अतः प्रशासनिक कमरों को उत्तर या पूर्व दिशा में बनायें। कार्यालय में वरिष्ट एवं अन्य प्रबंधक कक्ष के दक्षिण- पश्चिम भाग में इस प्रकार बैठाएं जिससे उसका मुख उत्तर या पूर्व की ओर हो, उनकी कुर्सियां आगंतुक की कुर्सियों से ऊँची हो तयह आगंतुको का मुख दक्षिण या पश्चिम दिशा में हो। कभी – कभी ऐसा भी देखा गया है कि छोटे –छोटे सुधार घरो में करने से वास्तु दोष दूर हो जाता है अतः ईशान कोण में कभी झाड़ू नही रखना चाहिए क्योंकि यह पवित्र कोण माना जाता है। कूड़ा-करकट ईशान कोण में कभी इकट्ठा ना होने दें। ज्यादा समय तक घर में कचड़ा कभी इकट्ठा ना होने दें। मनुष्य वैसे तो भवन, फैक्ट्री, व्यावसायिक संस्थान आदि बनाये जाते है लेकिन जब पुराने भवनों में सुधार करें तो विशेष ध्यान रखें अतः भवन में नए निर्माण को दक्षिण-पश्चिम में ना बढ़ाये। यदि भूखण्ड पश्चिम मुखी हो तो भवन का कोई भी भाग नया निर्माण उत्तर-पश्चिम के उत्तर की ओर ना करें। यदि भवन पूर्व मुखी है तो, दक्षिण-पूर्व फैक्ट्री में जल के लिए कुआँ, ट्यूबेल आदि उत्तर-पूर्व (ईशान कोण) में बनवाना चाहिए और ये ध्यान रहे की पानी का बहाव सदैव उत्तर –पूर्व ईशान कोण की ओर हो। सैप्टिक टैंक तथा सीवर लाइन की स्थापना एवं प्रवाह उत्तर –पश्चिम में रखें। फैक्ट्री का ढालान इस प्रकार हो जिससे वर्षा ऋतु का पानी एवं अन्य स्वच्छ जल का प्रवाह उत्तर –पूर्व दिशा में हो। छत के ऊपर पानी की टंकी को पश्चिम अथवा उत्तर –पश्चिम की दिशा में रखें इन सभी आधारभूत सिद्धान्त को ध्यान में रख कार निर्माण कार्य करने से सदैव लक्ष्मी की प्राप्ति होती है तथा रोग-शोक इत्यादि दूर होता है।

5.3.3 सफल व्यवसाय के लिए शहर चुनाव विचार

समय व स्थान मानव जीवन पर अपने प्रभाव को दर्शाता है अपितु, सम्पूर्ण पृथ्वी पर विभिन्न समयों में उनके शुभाशुभ परिणाम भी दृष्टिगोचर होते रहे हैं। हमारे ऋषि –मुनियों ने हमें ज्योतिष विज्ञान रूपी दर्पण की अमूल्य धरोहर दी है उसके आइने में हम यह देखने में सक्षम है कि किस प्रकार की घटनाएँ कब घटित होंगी। तथा इससे भी महवपूर्ण वास्तुशास्त्र है जिससे सम्पूर्ण जीवन में होने वाले शुभ- अशुभ फलों को निवास के अनुसार मानव प्राप्त करता है। विद्वानो ने समय की महत्ता को बल देते हुए मानव के कल्याण हेतु वास्तुशास्त्र रूपी ज्ञान प्रवाहित किया। जिससे हम यह जानकारी प्राप्त कर सकते हैं कि किस स्थान पर किस प्रकार की प्रभाव उत्पन्न हो सकती है। विद्वानो ने गृह एवं बड़े-बड़े भवनों के निर्दिष्ट स्थलों पर निर्माणों से अद्भुत विभिन्न शक्ति व प्रभाव बताये हैं, जिसका समावेश उपयोगी सिद्ध हो सकता है, इस प्रकार स्थान की शक्ति पर ही अच्छे एवं बुरे प्रभावों की उत्पादकता निर्भर करती है। समय और स्थान की अपनी-अपनी शक्ति है। स्थान पूरी पृथ्वी को इंगित करता है, भूमि एक महत्वपूर्ण वास्तु है इसमें ही विभिन्न ग्रामो, शहरों, नगरो सामान्य भवनों का समावेश है। प्रतेक मनुष्य के लिए इससे उत्पन्न अच्छे व बुरे प्रभावों को प्राणी मात्र को भुगतना ही पड़ता है। गृह निर्माण प्रत्येक व्यक्ति अभिलाषा है, जो जीवन पर्यंत बनी रहती है जब तक कि यह इच्छा पूरी ना हो जाए। हर मनुष्य गृह निर्माण करके उसमे सुखी पूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहता है।

जिस ग्राम,शहर या नगर जिसमे वास करना है या व्यापार करना है उस स्थान के चुनाव से है। हमारे वास्तु ग्रंथो में ग्राम वर्ण की काकड़ी के नाम से पूर्व के पाठ में बताया गया है। जिसके अनुसरण से मार्ग दर्शन प्राप्त किया जा सकता है इससे पहले हम अपनी बात आगे बतायें तो ज्योतिष के द्वारा यह देख लें की हमारे भाग्य में मकान, दुकान है की नहीं।

लग्नेश व सप्तमेश चतुर्थ भाव में हो तो बिना प्रयास के मकान की प्राप्ति होती है। स्वगृही चतुर्थेश हो तो भी भवन प्राप्ति योग बनता है। चतुर्थेश यदि दशम में हो तो पुराने माकन की प्राप्ति होती है। धनेश, लग्नेश, लाभेश की युति चतुर्थ भाव में हो तो अनेक मकान मिलता है।कर्क लग्न में गुरु हो तो भवन प्राप्ति होती है। चतुर्थ में शनि या राहु हो तो पुराने भवन प्राप्ति का योग बनता है। वृष लग्न में यदि चतुर्थ भाव में सूर्य हो तो अस्थायी मकान मिलता है। अगर चतुर्थेश अष्टम भाव में हो तो भी भवन प्राप्ति होता है। अगर चतुर्थेश सप्तम भाव में गया हो तो, स्त्री द्वारा भवन मिलने के योग होते है। लग्नेश स्वगृही हो तो जमीन मिलता है। चतुर्थेश एवं दशमेश एक-दुसरे के घर में हो तो भूमि वाला होता है। चतुर्थेश पंचम भाव में हो तो भी जमीन का स्वामी होता है। चतुर्थ एवं छठवें भाव का स्वामी स्वगृही हो तो शत्रु से भूमि प्राप्त होता है। अगर चतुर्थेश केन्द्र त्रिकोण में बली हो और मंगल भी बली हो तो भूमि योग बनता है। अगर चतुर्थेश, व्ययेश, अष्टमेश के साथ ट्रिक स्थान में हो तो जातक का घर अग्नि से जल जाता है। ‘ जातकाऽलंकार श्लोक संख्या 9 ’।

इन मासों में गृह प्रवेश करना चाहिए – पौष, फाल्गुन,वैशाख, माघ, श्रावण, कार्तिक इन मासों में नवीन घर में प्रवेश करे तो लाभ प्राप्त होगा। अन्य मास में मुहूर्त सामान्य होता है। गृहारम्भ में तिथि 3,4,5,6,7,10,11,12,13,15, श्रेष्ट है।

प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन में अच्छे से अच्छा कार्य करने का प्रयत्न करता है। अधिकांश लोग इस जीवन में धन कमाने की होड़ में लगे हुए है और मानसिक शान्ति के लिए उपाय चाहते है। लगभग सभी लोग अपने- अपने संतान के उज्जवल भविष्य की कामना करते है सभी यही चाहते है कि उनका संतान मेघावी हो एवं भविष्य में धन-सम्मान एवं यश कमाए। संतान के उज्जवल भविष्य के लिए आवश्यक है की आपके निवास की वास्तु व्यवस्था वास्तुशास्त्र के अनुसार हो। हालाँकि वास्तु का क्षेत्र बहुत विशाल है इसलिए यहाँ पर कुछ सूक्ष्म बातों को ही लिखा जा रहा है – भवन निर्माण का विचार आते ही सबसे पहले यह विचारणीय है की घर किस ग्राम में,किस नगर में अथवा किस क्षेत्र में बनाया जाए क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति को प्रत्येक नगर या ग्राम में घर शुभदायक नहीं होता है। अतः कोण से ग्राम या नगर में घर का निर्माण कराया जाए जो सुख-समृधी तथा शांतिकारक हो इस विषय में सर्वप्रथम अपने अजन्म स्थान का ज्ञान आवश्यक है जो की जन्म कुण्डली से ज्ञात किया जा सकता है। जन्म कुण्डली ना होने पर अपने प्रचलित नाम के आधार पर अपना नक्षत्रा जानना चाहिए। इस प्रकार जिस ग्राम या नगर में मकान बनाने के इच्छुक हो उसके प्रथम अक्षर से उस ग्राम या नगर का नक्षत्र भी जानकारी कर ले। मकान बनाने से पूर्व से निश्चित कर लें की आपको मकान कब और कैसा बनाना चाहिए ? वास्तुशास्त्र में इन विषयों पर जैसे प्लाट का आकार कैसा हो, मकान का मुख्य द्वार कैसा हो ? किस दिशा में हो तथा मकान बनाने के नियमों का पूर्व के पाठो में वर्णन किया गया है अब यहाँ पर नक्षत्रों के अनुसार ग्राम नाम एवं गृह स्वामी के नाम नक्षत्र से संख्या के अनुसार फल समझना चाहिए। अन्य नियम है की ग्राम या नगर का क्या नक्षत्र है, यह जानकारी कर लें, उस संख्या से अपने नक्षत्र की संख्या तक गिने, जो संख्या शेष आवे,

उसका फल इस प्रकार समझना चाहिए। जैसे – ग्राम या नगर के नक्षत्र से गृह स्वामी का नक्षत्र 1,2,3,4,5, 21वा नक्षत्र है तो शुभ है शेष संख्यक नक्षत्रों में अशुभ समझना चाहिए। अन्य मतानुसार –

ग्राम या नगर के नक्षत्र से, अपने नक्षत्र तक गिने, जो संख्या प्राप्त हो, उसका फल इस प्रकार जानना चाहिए – 1 से 7 तक धन-सम्पति व मान-सम्मान दायक है। 8 से 14 तक धन हानि कारक है । 15 से 21 तक शुख-शान्ति एवं समृद्धि। 22 से 28 तक सुख की हानि और भटकाव समझना चाहिए।

अन्य मतानुसार – ग्राम या नगर का नक्षत्र क्या है, इसको जान लें, इस संख्या से अपने नक्षत्र संख्या तक गिने, जो संख्या आवें उसका फल इस प्रकार जानना चाहिये– 1 से 5 तक लाभकारी श्रेष्ट, 6 से 8 तक धन हानि, 9 से 13 तक धन-धान्य की वृद्धि, 14 से 19 तक दाम्पत्य सुख का अभाव स्त्री कष्ट, स्त्री हानि, 20 अंक आने पार पैर टूटने का भय। 21 से 24 तक संपत्ति वृद्धि, 25 अंक कष्ट तथा भय कारक, 26 अंक आने पर कष्ट व शोक प्रद, 27 अंक आने पर ग्राम एवं नगरवासियों से शत्रुता इस प्रकार विचार कर के रहने योग्य स्थान का निर्धारण करना चाहिए। परन्तु यहाँ पर हम चर्चा कर रहे है व्यवसाय के लिए शहर स्थान का चुनाव परन्तु प्रसंगवश रहने योग्य ग्राम या नगर का चर्चा कर दिया गया।

धन प्राप्ति के लिए किसी भी शुभ तिथि एवं शुभ दिन में प्रातः कल उठ कर ' ॐ ऐ श्रीं क्लीं ' का ग्यारह हजार बार जाप करें। अपने घर का निर्माण होगा ज्योतिषीय सिद्धान्तो के अनुरूप ही वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों को जातक विशेष पर लागु करना चाहिये। अक्सर देखने को मिलता है की वास्तु निर्मित प्रमुख ज्योतिषीय सिद्धान्तों की अवहेलना कर वास्तु परक सिद्धान्तों को एक सामान ही सभी जातको पर लागु करने से अपेक्षित अनुकूलता की स्थिति नहीं आ पाती है और कभी- कभी तो लाभ के स्थान पर प्रतिकूल स्थितियां बनने लगती है। अतः इस दोष से बचने के लिए वास्तु शास्त्री को वास्तु निर्मित ज्योतिष ज्ञान के प्रमुख सिद्धान्तों को अवश्य ही अपना कर लागु कराना चाहिए। ज्योतिषीय सिद्धान्तों को वास्तुशास्त्र से अलग नहीं किया जा सकता है। एक वास्तुकार को ज्योतिष के सिद्धान्तों की जानकारी होना अति आवश्यक है। किसी क्षेत्र में यदि भूखण्ड खरीदने से पहले यह जानकारी ले लेना अधिक लाभकारी होगा की उस स्थान में ख़रीदे जाने वाले स्थान में लाभ होगा या नहीं । इस बात की जानकारी निम्नलिखित तालिका से प्राप्त कर सकते है।

गृह \ व्यापार स्थल के स्वामी की राशि के अनुकूल एवं शुभफलप्रद शहरों \ स्थानों की राशियां

क्र.सं.	गृह \व्यापार स्थल के स्वामीकी राशि	सफल एवं शुभदायक शहरों की राशि
1.	मेष	वृष, सिंह, धनु, मकर और कुम्भ
2.	वृष	मिथुन .कन्या, मकर .कुम्भ और मीन
3.	मिथुन	कर्क, तुला, कुम्भ, मीन और मेष
4.	कर्क	सिंह, वृश्चिक, मीन, मेष और वृष
5.	सिंह	कन्या, धनु, मेष, वृष और मिथुन
6.	कन्या	तुला, मकर, वृष, मिथुन, और कर्क

7.	तुला	वृश्चिक, कुम्भ, मिथुन, कर्क और सिंह
8.	वृश्चिक	धनु, मीन, कर्क, सिंह और कन्या
9.	धनु	मकर, मेष, सिंह, कन्या और तुला
10.	मकर	कुम्भ, वृष, कन्या, तुलाऔर वृश्चिक
11.	कुम्भ	मीन, मिथुन, तुला वृश्चिक और धनु
12.	मीन	मेष, कर्क, वृश्चिक, धनु और मकर

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि जातक की नाम राशि से दूसरी, पांचवीं, नवीं, दशवीं एवं ग्यारहवीं नाम राशि यदि क्षेत्र की हो तो यह शुभ है और अगर इसी क्रम में व्यक्ति की जन्म राशि से ग्राम सम्बन्धी राशि पहला, तीसरा, चौथा या सातवीं पडती है तो यह मध्यम फलदायी है। तथा स्थान या क्षेत्र की राशि अगर जातक की नाम राशि से छठें, आठवें, बारहवें आती है तो ऐसे अशुभ कहा गया है। भवन निर्माण हेतु उपयुक्त शहर के चयन के उपरान्त उस ग्राम –शहर के मध्य भाग को आधार मानते हुए उपयुक्त एवं अनुकूल दिशा का निर्धारण किया जाना भी आवश्यक है जो पहले बताया जा चुका है फिर भी आप नियमानुसार शहर का चुनाव कर के अपना व्यवसाय स्थान का चयन उक्त नियमानुसार करके लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

5.4 सारांश

भारतीय वास्तुशास्त्र के आधारभूत सिद्धान्त और उसकी गहराई, विशाल लहराते हुए समुद्र के समान है। इसमें लौकिक समुन्नति के वे सभी साधन उपलब्ध है, जिनमें सामान्य बुद्धि वाले गृहस्थ तथा शास्त्रों के मर्मज्ञ दोनों ही अपनी –अपनी रूचि के अनुसार भवन निर्माण में मार्ग निर्देश प्राप्त कर सकते हैं। वास्तुशास्त्र का महत्व अब किसी से छुपा नहीं है। सम्पूर्ण रूप से सोच –समझकर बनवाया हुआ भवन गृहस्वामी के लिए वरदान सिद्ध होता है, जब कि थोड़ी सी त्रुटी या दोष गृह स्वामी के परिवार के लिए समृद्धि और शान्ति नष्ट कर देती है। चूँकि शुद्ध और मंगलकारी मार्ग का अनुसरण करते हुए गृह -निर्माण के पथ को प्रशस्त करने के इच्छुक गृह स्वामी इस पाठ के आधारभूत सिद्धान्तों के अनुसार भवन निर्माण करके अवश्य लाभ उठा पायेंगे, किन्तु यह अवश्य ध्यान रहे कि भारतीय स्थापत्य कला में वास्तुशास्त्र की महत्ता स्वत:सिद्ध है। एक प्रकार से यह भवन –निर्माण कला का ऐसा जीवनोपयोगी अंग है, जिसे आज व्यापक वनाने की आवश्यकता है। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में वस्तुशास्त्र के विषय में बहुत ही विवेचन मिलता है। भारत में ही वास्तुशास्त्र का विकास हुआ। वास्तुविदों द्वारा वर्तमान में जो उल्लेख मिलता है इसके आधार पर यह कहना सर्वथा उचित है कि प्राचीन काल में भारतवर्ष में ही स्थापत्यशैली का विकाश हुआ था।वर्तमान समय में आधुनिक प्रकार के मकान, दुकान,घर, चेम्बर्स, मन्दिर आदि का निर्माण हो रहा है, लेकिन प्राचीन शैलियों का प्रयोग किया जाय तो यह स्थापत्य वर्धक, समृद्धि वर्धक और ऐश्वर्यवर्धक हो सकता है। वास्तुशास्त्र के अध्ययन के लिए प्राचीन ऋषि मुनियों द्वारा दिए गये नियमों का अध्ययन करना परम आवश्यक है। न्यायशाला के जनक महर्षि गौतम ने कहा है कि शौच कर्म सदैव पूर्व अथवा उत्तर की ओर मुख करके ही करना चाहिए। वास्तुशास्त्र के अनुसारशौचालय या मूत्रालय का निर्माण नैऋत्य दिशा में ही होना चाहिए, क्योंकि एसी स्थिति में मुख पूर्व अथवा उत्तर की ओर होगा। वास्तुशास्त्र ज्योतिष का ही एक अंग है आज जो भवन निर्माण हो रहे हैं।

वे अपरिहार्य दशाओं और अज्ञानतावश हो रहे हैं। आज भवन निर्माण में केवल सुविधा का विचार किया जाता है अत: उपरोक्त आधारभूत सिद्धान्तों के आधार पर अगर यदि भवन निर्माण किया जाय तो निश्चित ही समाज को लाभ प्राप्त होगा तथा आप यश के भागी बनेंगे मुझे आशा है कि यह पाठ आप सभी को पसन्द आएगा एवं उत्साह के साथ सबको आपलोग बतायेंगे।

5.5 शब्दावली

विश्रामस्थल = ठहरने का स्थान, परिदृश्य = चारों ओर दिखने वाला दृश्य, वैकल्पिक = ऐच्छिक,

तिजोरी = लोहे की छोटी सी मजबूत आलमारी, प्रतिपादित = निर्धारित निश्चित, निरन्तर = हमेशा

प्रदक्षिणा= परिक्रमा, अनहोनी = अचानक, निरापद = बिना संकट के,

पंचतत्व = आकाश – वायु – अग्नि – जल – पृथ्वी,

सारगर्भित = प्रभावकारी .

शुद्धता = शुद्ध होने का प्रभाव, निर्दिष्ट = निर्देश किया गया, रेखंकित = रेखाओं से बना हुआ, भीरु = डरा हुआ,

अविश्वास = जो किसी पर विश्वास नहीं करता हो, भयानक = डरावना,

संवेदना = सहानुभूति, प्रचुर = पर्याप्त, अप्रत्याशित = आकस्मिक, यथार्थवादी = यथार्थ सम्बन्धी,

शक्तिपुंज = शक्ति का श्रोत, वृक्षसम्पदा = वृक्ष से ऐश्वर्य वैभव की प्राप्ति, दो मंजिल = एक भवन के उपर दूसरा घर बनवाना, तकनीकी = प्राविधिक शिल्पक, सद्भावना = किसी के प्रति अच्छा भाव, संवेदनशील = भावुक –सहृदय, शिवत्व = कल्याण प्राप्ति उपाय (कल्याण प्राप्त कराने वाला, करने वाला), समावेश = व्याप्त होना,

लग्नेश = लग्न का स्वामी, धनेश= धन भाव के स्वामी, चतुर्थेश = शुखभाव का स्वामी

5.8 उपयोगी पुस्तकें

1. गृहवास्तुप्रदीप, डॉ. (श्री मती) शैलजा पाण्डेय, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी
2. वास्तुदोष कारण और निवारण, लेखक – शशिमोहन बहल, प्रकाशन – 20 अक्टूबर 2020, प्रकाशक – राधा पाकेट बुक्स 33 हरी नगर, मेरठ 25002
3. वृहद्वास्तुमाला, सम्पादक – डॉ.ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, डॉ. रवि शर्मा, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन
4. वास्तुसारसंग्रह, लेखक – आचर्य श्री कमलाकान्त शुक्ल, सम्पूर्णा नन्द संस्कृत विश्व विद्यालय वाराणसी
5. भवनभास्कर, लेखक – राजेन्द्र कुमार धवन, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी संबत 2057, गीता प्रकाशन गोरखपुर

6. वास्तुचिन्तामणि, सम्पादक – नरेन्द्र कुमार बड़जात्या, श्री प्रज्ञाश्रमण दिगम्बर जैन संस्कृति न्यास, ज्योति निलय गरुड़ खाम्ब चौक इतवारी नागपुर
7. शिल्पदीपक, सम्पादक – डॉ. श्री कृष्ण जुगनु, चौखम्भा संस्कृत सीरीज आफिस वाराणसी
8. देव शिल्प (मन्दिर वास्तु एवं स्थापत्य), रचयिता –सिद्धान्त रत्नाकर, सम्पादक – नरेन्द्र कुमार बडजात्या छिंदवाड़ा, वर्ष –सिद्ध क्षेत्र नैनागिरी 15 /07 / 2000

5.7 बोध प्रश्न

1. वास्तुशास्त्र के आधारभूत सिद्धान्तों को लिखिए ?
2. शुभ वास्तु के प्रभाव को लिखिए ?
3. अशुभ वास्तु के प्रभाव को लिखिए ?
4. वास्तुदोष और शयन कक्ष पर प्रकाश डालिए ?
5. व्यापार की सफलता के लिए राशियों के अनुसार शहर का चुनाव कीजिए ?

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY